Sixteenth Loksabha

an>

Title: Need to give the status of Scheduled Tribes to Boya Caste in Telangana state

श्री नन्दी एल्लैया (नगर कुरनूल) : महान पुण्य व्यक्ति महर्षि वाल्मीकि, जो महान ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण के रचयिता हैं, का जन्म अत्यंत पिछड़े बोया समुदाय में हुआ था। अतः इस समुदाय को तेलंगाना राज्य में अनुसूचित जनजाति समुदाय में शामिल किया जाना चाहिए।

वर्ष 1956 से पहले आंध्र प्रदेश राज्य गठन के समय बोया समुदाय को अनुसूचित जनजाति के रूप में घोषित किया गया था, लेकिन आंध्र प्रदेश राज्य के गठन के पश्चात् यह राज्य आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों के रूप में बंट गया। बिना किसी उचित कारण इस बोया समुदाय को तेलंगाना राज्य में बी.सी. 'ए' वाल्मीकि बोया समुदाय में जोड़ दिया गया, जबकि आंध्र प्रदेश राज्य के गठन के समय से आज तक बोया समुदाय अनुसूचित जनजाति समुदाय से जुड़ा हुआ है।

बोया समुदाय की जनसंख्या लगभग 3,36,349 है, जिसे अनुसूचित जनजाति समुदाय से जोड़ा जाना है। तेलंगाना राज्य के नगर करनूल जिले में ही अकेले बोया समुदाय की जनसंख्या लगभग 2,50,696 है। तेलंगाना राज्य से संबंधित बोया समुदाय अत्यंत ही निर्धन तथा सामाजिक और आर्थिक रूप से एकदम पिछड़ा हुआ है। इनका जीवन स्तर अभी भी अत्यंत पिछड़ा है।

इनमें से कुछ लोग अभी भी मैदानी क्षेत्रों में अत्यंत पिछड़े हुए समाज में बिना किसी सामाजिक ढांचे को बदलते हुए निवासरत हैं।

इन सभी तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए मैं केंद्र सरकार से आग्रह करूँगा कि बोया समुदाय को तेलंगाना राज्य में अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया जाए। धन्यवाद।